**गुरु नानक - सबद १००**

**पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥**

**रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७५**

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥
खीरु पीऐ खेलाईऐ वणजारिआ मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥
मात पिता सुत नेहु घनेरा माइआ मोहु सबाई ॥
संजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार कराई ॥
राम नाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति ॥
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥१॥

**सार:** जीवन शुद्ध मासूमियत और खुलेपन की स्थिति में शुरू होता है जहाँ जागरूकता विश्वासों, आदतों या एक परिभाषित पहचान की बाधाओं के बिना स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होती है। इस अछूते दायरे में, हम उम्मीदों, डर और तुलनाओं के बोझ से मुक्त हो जाते हैं जिससे हम पूरे दिल से जीवन को अपना पाते हैं। बिना किसी निर्णय या पसंद के, केवल एक सच्ची उपस्थिति मौजूद होती है। हालाँकि, विभिन्न प्रभावों के माध्यम से धीरे-धीरे प्रशिक्षण आ सकता है जिससे जो कभी निर्मल था, वही धीरे-धीरे द्वैत के रूप में आकार लेने लगता है। अपने मूल अस्तित्व की स्मृति के माध्यम से हम अपने वास्तविक स्वरूप के साथ पुनः एकत्व प्राप्त कर सकते हैं।

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥
जीवन के पहले पहर में, हे 'व्यापारी मित्र', बुद्धि बालक के समान भोली और अनजान होती है। 'व्यापारी मित्र' जागरूकता को दर्शाता है और रात का पहला पहर जीवन की शुरुआत का प्रतीक है जो निर्दोष और शुद्ध है, बाहरी प्रभावों से अछूता है।

खीरु पीऐ खेलाईऐ वणजारिआ मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥
खीर खिलाते हुए और प्यार से खेलते हुए, हे 'व्यापारी मित्र', माता-पिता अपने बच्चे के प्रति स्नेह से उसका पालन-पोषण करते हैं। यह कर्म सहज और निष्काम प्रेम का प्रतीक है जो यह दर्शाता है कि अस्तित्व देना और पाना, इस चक्र के माध्यम से स्वयं को कैसे पोषित करता है।

मात पिता सुत नेहु घनेरा माइआ मोहु सबाई ॥
माता-पिता का अपनी संतान के प्रति स्नेह बहुत होता है, यह सब माया और मोह का विस्तार है। यह भ्रम की शुरुआती उम्र का प्रतीक है जहाँ भावनात्मक बंधनों का आराम व सुख-सुविधाएँ वास्तविक सत्य की समझ से ध्यान हटाने लगती हैं।

संजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार कराई ॥
प्राकृतिक शक्तियों के मिलन से जीवन आकार लेता है, वह अपने स्वभाव के अनुसार कर्म करता है और अपने अंतर्निहित स्वभाव से प्रभावित कार्यों में संलग्न होता है। यह कारण और प्रभाव के नियम को दर्शाता है जहाँ प्रकृति ढाँचा स्थापित करती है और आचरण हमारे मार्ग को आकार देता है।

राम नाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति ॥
सर्वव्यापी एकता का चिंतन किए बिना, द्वैत से जुड़े मन से मुक्ति नहीं मिल सकती।

कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥१॥
नानक कहते हैं कि मानव जीवन के शुरूआती चरण से ही, सर्वव्यापी एकता को याद करके मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। यह दर्शाता है कि जागरूकता शारीरिक विकास से नहीं बल्कि अंतरात्मा के जागरण से उत्पन्न होती है। (१)

**तत्त्व:** गुरु नानक यह बताते हैं कि चेतना केवल शारीरिक विकास का नतीजा नहीं है बल्कि अंतरात्मा के जागरण से उत्पन्न होती है। यह अंदरूनी जागृति हमें एकत्व की निर्मलता को पहचानने की शक्ति देती है। इस अवस्था में हम अपना ध्यान अंदर की ओर लगाना शुरू करते हैं और उन संस्कारों व स्वरूपों को समझकर त्यागने लगते हैं जो बचपन की मासूमियत में मिलने वाली शांति का अनुभव करने में रुकावट डालते हैं। इस बोध के साथ मन अज्ञानता से दूर हो जाता है, इससे सचेत चुनाव करने का मौका मिलता है जो हमारे सहज, जन्मजात स्वभाव का पोषण करता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

**Oneness In Diversity Research Foundation**

**वेबसाइट:** OnenessInDiversity.com

**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**